गुरु नानक – सबद ३३

आसणु लोइ लोइ भंडार ॥

जपु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ७

आसणु लोइ लोइ भंडार ॥
जो किछु पाइआ सु एका वार ॥
करि करि वेखै सिरजणहारु ॥
नानक सचे की साची कार ॥
आदेसु तिसै आदेसु ॥
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥३१॥

सार: प्रकृति मनुष्य के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, लेकिन जब वह इसे एक उपयोगी स्रोत के रूप में देखता है तब वह इसके साथ अपना संबंध खो भी सकता है। यदि मनुष्य इस तथ्य को स्वीकार कर लेता है कि प्रकृति एक पोषण करने वाली इकाई है जिसका प्रत्येक तत्व दूसरे पर निर्भर करता है, तब इस अनुभव की पूरी स्थिति से सद्भाव बढ़ता है। यह अंतरर्दृष्टि उन्हें सृजन के स्रोत पर वापस ले जाती है।

आसणु लोइ लोइ भंडार ॥
प्रकृति उस सर्वव्यापी शक्ति का अदभुत अभिव्यक्ति का खज़ाना है जो सृष्टि के हर पहलू में व्याप्त है और उसे नियंत्रित करती है।

जो किछु पाइआ सु एका वार ॥
एक सर्वव्यापी चेतना, जिसने दुनिया की रचना को बनाने में जीवन का बीज डाला है, निरंतर विकसित हो रही है।

करि करि वेखै सिरजणहारु ॥
सर्वव्यापी सृष्टिकर्ता, सृष्टि को बना कर उसके अस्तित्व को बनाये रखता है।

नानक सचे की साची कार ॥

नानक कहते हैं कि सच्चे रचयिता की रचना ही सच्ची है।

आदेसु तिसै आदेसु ॥

प्रकृति के हुकुम का सम्मान करना सार्वभौमिक नियम है।

आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥३१॥

अनादि काल, से स्रोत, दोषरहित, अनंत, सर्वव्यापी अदृश्य ऊर्जा एक ही मौलिक इकाई रही है। (३१)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि एक सार्वभौमिक कानून के रूप में प्रकृति का सम्मान करना हमारा अंतर्निहित, बिना शर्त दायित्व है जो सार्वभौमिक परोपकार को बढ़ावा देता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com